विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग-अष्टम्

विषय- हिंदी

।। अध्ययन-सामग्री ।।

बच्चों ,आज की कक्षा में आपको 'वर्ण-विचार ' से संबंधित सामग्री दी जा रही है । आप इसे ध्यानपूर्वक पढ़ें और अपनी कांपी में लिखें । दी गई सामग्री से संबंधित चर्चा हम live class में करेंगे ...

वर्ण विचार
(Orthography)

2

जब बच्चा सबसे पहले भाषा को बोलना सीखता है, वह केवल ध्वनियों का उच्चारण करता है। धीरे–धीरे वह भाषा का प्रयोग करने लगता है। भाषा के चार कौशल होते हैं– सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। इनमें से पहले दो कौशल मौखिक कौशल हैं और शेष दो लिखित। उच्चरित ध्वनियों को लिखकर व्यक्त करने के लिए हमें लेखन–चिह्नों या लिपि–चिह्नों की आवश्यकता होती है। इन्हें वर्ण कहते हैं।

भाषा की उच्चरित ध्वनियों के लिखित रूप को वर्ण कहते हैं।

वर्ण भाषा की सबसे छोटी ईकाई है, इसके और खंड नहीं किए जा सकते। वर्ण दो प्रकार के हैं– स्वर और व्यंजन। प्रत्येक शब्द वर्णों के सार्थक संयोजन से बनता है। इन्हें अक्षर भी कहा जाता है।

वर्णों की निश्चित क्रमबद्ध व्यवस्था वर्णमाला कह लाती है।

हिन्दी की वर्णमाला

प्रत्येक भाषा की अपनी लेखन व्यवस्था (लिपि) होती है। हिंदी वर्णमाला को देवनागरी लिपि में लिखा जाता है। हिंदी एक सुविकसित संपर्क भाषा, राजभाषा राष्ट्रभाषा और साहित्यिक भाषा है। पहले टाइपराइटरों के कुंजीपटल फिर कंप्यूटर द्वारा प्रयोग किए जाने के लिए देवनागरी लिपि और वर्तनी का मानकीकरण किया गया है।

हिंदी की वर्णमाला

स्वर अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

अयोगवाह अं (अनुस्वार) तथा अः (विसर्ग :)

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ (कवर्ग)	य र ल व	(अंतस्थ)
च	छ	ज	झ	ञ (चवर्ग)	श ष स ह	(ऊष्म)
ट	ठ	ड	ढ	ण (टवर्ग)	विशेष व्यंजन–ड़ ढ़	(उत्क्षिप्त)
त	थ	द	ध	न (तवर्ग)	संयुक्त व्यंजन–क्ष त्र ज्ञ श्र	
प	फ	ब	भ	म (पवर्ग)	आगत ध्वनियाँ– ऑ ज़ फ़	

स्वर Vowels

जिन वर्णों के उच्चारण में वायु बिना किसी रूकावट के मुँह से निकलती है, उन्हें स्वर कहते हैं।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ — 11 स्वर

अं अः (अयोगवाह) – स्वर और व्यंजन का मिला–जुला रूप

स्वरों के भेद

स्वरों के तीन भेद किए जाते हैं–

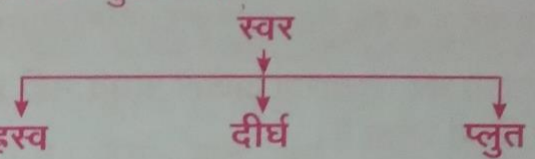

क. **ह्रस्व स्वर :** जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है उनहें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ह्रस्व स्वर चार माने जाते हैं– अ, इ, उ, ऋ। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं। हिंदी में 'ऋ' का उच्चारण 'रि' के रूप में किया जाता है। उच्चारण के अनुसार 'ऋ' को स्वर नहीं माना जा सकता किंतु अन्य स्वरों की तरह मात्रा के आधार पर इसे स्वरों में सम्मिलित किया जाता है।

ख. **दीर्घ स्वर :** इनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर के उच्चारण से दुगुना समय लगता है। दीर्घ स्वर सात हैं– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

ग. **प्लुत स्वर :** जिन स्वरों के उच्चारण में मूल स्वर से तिगुना समय लगता है, उन्हें 'प्लुत स्वर' कहते हैं, जैसे – ओ३म्। हिंदी में प्लुत स्वर का प्रयोग नहीं मिलता।

स्वरों की मात्राएँ: स्वर को जब व्यंजनों के साथ मिलाकर लिखा जाता है तब उसको मात्रा के रूप में लिखा जाता है। 'अ' की अलग से मात्रा नहीं दर्शायी जाती। यह सभी व्यंजनों के साथ जुड़ा होता है। इसे अलग करना हो तो व्यंजन के नीचे हलंत (्) लगाया जाता है। जैसे– क्, ख् आदि। अन्य सभी स्वरों की मात्राएँ इस प्रकार हैं–

स्वर	मात्रा	उदाहरण
अ	–	मन, अब
आ	ा	दाम, नाना
इ	ि	दिन, किरण
ई	ी	कील, लीची
उ	ु	चुन, पुल
ऊ	ू	शूल, सूत

स्वर	मात्रा	उदाहरण
ऋ	ृ	कृषि, मातृ
ए	े	नेक, मेला
ऐ	ै	वैर, जैसा
ओ	ो	बोलो, देखो
औ	ौ	सौरभ, कौन